



कृषिवानिकी समाचार पत्र Agroforestry Newsletter

राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी-284 003 (उ.प्र.)
National Research Centre for Agroforestry, Jhansi-284 003 (U.P.)

अक्टूबर-दिसम्बर, 2005, अंक 17, संख्या 4


October-December, 2005, Vol. 17, No. 4

निदेशक की कलम से.....

विश्व में लगभग 25 वर्ष पहले से कृषिवानिकी के क्षेत्र में वैज्ञानिक एवं सही तरीके से अनुसंधान कार्य शुरू होने के बाद भारत वर्ष सबसे अग्रणी है। देश के विविध भू उपयोग, भौगोलिक भिन्नता, आबादी, राजनैतिक एवं सामाजिक सुधार के गुणों के साथ-साथ कृषि तथा वानिकी अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में अब तक प्राप्त आंकड़ों के आधार पर विकासशील देशों में कृषिवानिकी के विकास में भारत का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भारतवर्ष में कृषिवानिकी की तरफ विशेष ध्यान सन् 1988 में इस केन्द्र की स्थापना एवं अखिल भारतीय कृषिवानिकी समन्वय परियोजना लागू होने के पश्चात् दिया गया। उक्त परियोजना देश भर में 36 कृषि विश्वविद्यालयों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों में कृषिवानिकी अनुसंधान के सबसे बड़े तंत्र के रूप में कार्यरत है। अब, कृषिवानिकी द्वारा आर्थिक वृद्धि, गरीबी उन्मूलन तथा वातावरण सुधार के महत्व को देखते हुये इसको विभिन्न अनुसंधानकर्ताओं, योजनाकारों तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा अपनाया जा रहा है। देश में हरित क्रांति के लिये चलाये जा रहे अभियान में कृषिवानिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। पच्चीस वर्षों के सतत अनुसंधान ने साफतौर पर कृषिवानिकी की क्षमता को देश के विभिन्न क्षेत्रों में सिद्ध कर दिया है और कुछ पद्धतियाँ बड़े स्तर पर अपनायी भी जा रही हैं किन्तु इन पद्धतियों का व्यापक प्रसार अभी बाकी है। यहाँ तक कि कुछ पद्धतियाँ अभी लाभार्थियों तक पहुँच ही नहीं पायी हैं। ऐसा विभिन्न कारणों से हो रहा है जिन्हें आने वाले दिनों में दूर करने के प्रयास जारी हैं।




(एस.के. ध्यानी)

FROM THE DIRECTOR'S DESK.....

India has been in the forefront of the Agroforestry research ever since organized research in agroforestry started world wide about 25 years ago. Considering the country's unique land-use, agroclimatic features, demographic, political and socio-cultural characteristics as well as its strong record in agricultural and forestry research, India's experience in agroforestry research is important to agroforestry development, especially in developing nations.

Agroforestry received much attention in India after establishment of NRCAF at Jhansi in 1988 with ICAR's largest net work of AICRP on Agroforestry (36 Centers) at different SAUs and ICAR institutes. Now, Agroforestry research is very much accepted by the researchers, policymakers and others for its perceived ability to contribute significantly to economic growth, poverty alleviation and environmental amelioration, as such today agroforestry is an important part of the 'evergreen revolution' movement in the country. Twenty-five years of investments in research have clearly demonstrated the potential of agroforestry in many parts of the country and some practices have been widely adopted. But the vast potential remains largely under - exploited and many technologies have not reached to the stakeholders. This is due to result of the interplay of several complex factors, which needs to be addressed in days to come.


(S.K. DHYANI)

ऑवला आधारित कृषिवानिकी को बढ़ावा देने के क्रम में सीखे गये अनुकरणीय पाठ

LESSONS LEARNT DURING PROMOTION OF AONLA BASED AGROFORESTRY SYSTEM IN BUNDELKHAND REGION

फसलोत्पादन में आयी स्थिरता एवं मौसम के नित बदलते स्वरूप से उपजी अनिश्चितता के कारण कृषिवानिकी आज की आवश्यकता बन गयी है। कृषिवानिकी अपनाने के कई अपरिहार्य कारण हैं। यह पद्धति प्रतिकूल मौसम में भी कुछ न कुछ उत्पादन देने में सक्षम है इसलिए कृषकों का रुझान भी इसके प्रति बढ़ा है। विगत वर्षों में राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र ने अपने शोधों से यह भली प्रकार सिद्ध कर दिया है कि सीमान्त/क्षीण भूमियों वाली असिंचित दशा में ऑवला आधारित कृषिवानिकी न सिर्फ अधिक उत्पादन देती है वरन् सतत् उत्पादन भी सुनिश्चित करती है।



Agroforestry landuse is need of the day as it ensures minimum production during off years besides increasing total vegetal cover and accrues other tangible/intangible benefits. Research experiences at NRCAF Jhansi have amply proved that aonla based agroforestry system under

rained conditions on marginal lands is highly remunerative and sustainable.

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में ऑवला आधारित कृषिवानिकी भू-उपयोग को बढ़ावा देने के लिए किये जा रहे अनवरत प्रयास से किसान स्वतः इस पद्धति को अपनाने के लिये आगे आ रहे हैं। विगत 3 वर्षों में 100 से अधिक किसानों ने ऑवला आधारित कृषिवानिकी को अपनाया है। फलस्वरूप, उच्च गुणवत्ता वाले ऑवलें के पौधों की माँग एकाएक तेजी से बढ़ गयी है और किसान इसे उच्च कीमत पर खरीदने को तैयार है।

Constant efforts for promoting aonla based agroforestry landuse in Bundelkhand region is now paying rich dividends. Large Number of farmers are coming forward to adopt the landuse. In past 3 years more than 100 farmers planted 2586 aonla plants under agroforestry system in an area of 15.5 ha. As such, demand of quality planting material of aonla has suddenly increased and farmers are readily paying premier prices and harnessing benefits.

ऑवला आधारित कृषिवानिकी को आगे बढ़ाने के क्रम में सीखे गये अनुकरणीय पाठों को यहाँ सूचीबद्ध किया जा रहा है-

During the course of aonla promotion in the region following lessons were learnt.

- ◆ किसानों को मुफ्त पौध उपलब्ध कराना अविलम्ब बन्द कर देना चाहिए क्योंकि मुफ्त मिले पौधों की देखरेख किसान नहीं करते फलतः उनका स्थापन अच्छा नहीं होता।
- ◆ किसानों को थैलियों में तैयार उन्नत किस्म के पौधों को लगाने के लिए प्रेरित करना चाहिए क्योंकि उनका खेत में स्थापन अच्छा होता है।
- ◆ असिंचित दशा में जहां तक संभव हो पौध रोपण का कार्य वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में ही करना चाहिए। इससे पौधों को स्थापन व बढ़वार का पर्याप्त समय मिल जाता है और वर्षा ऋतु की समाप्ति पश्चात् उनकी जीवितता बढ़ जाती है।
- ◆ अच्छे स्थापन के लिए खेत में जल निकास की पर्याप्त व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे खेत में 24 घंटे से अधिक जल प्लावन न रहे अन्यथा पौध स्थापन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- ◆ छायादार स्थानों अथवा खड़े बगीचे में पौधों को नहीं लगाना चाहिए। इससे पौधों की बढ़वार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- ◆ Free of cost supply of planting material should be immediately stopped as receiver does not pay attention to plants and ultimately survival of plants is very poor.
- ◆ Potted plants of improved variety should be planted as they ensure better survival of plants in field.
- ◆ Under rainfed conditions, as far as possible, planting should be done during early monsoon season so that young plants get enough time to establish and grow before cession of rains.
- ◆ Water logging for more than 24 hours should be avoided for better establishment.
- ◆ Plantation in shade or inside old orchards should be avoided to boost growth.

- ◆ पौधों को छुट्टा जानवरों जैसे गाय-भैंस, भेंड़, बकरी, ऊँट व नीलगाय से रक्षा करनी चाहिए। इसके लिए ट्रीगार्ड का प्रयोग करना चाहिए अथवा रखवाली की पर्याप्त व्यवस्था अनिवार्य है।
- ◆ रोपण के शुरुआती वर्षों में अन्तर्शस्य अवश्य करना चाहिए इससे फसलों के लिए की गयी जुताई-गुड़ाई, सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण, उर्वरक प्रयोग से पौधों को भी फायदा होता है और देख-रेख भी अच्छी होती है।
- ◆ यदि संभव हो तो पौध रोपण के प्रथम वर्ष में गर्मी के मौसम में पेड़ों की सिंचाई अवश्य कर देनी चाहिए। इससे पौधों की बढ़वार अच्छी होगी। ज्ञात हो कि ऑवला में पौध वृद्धि की शुरुआत बसन्त ऋतु से होती है। कम पानी की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में गर्मी की सिंचाई ड्रिप या घड़े अथवा बाल्टी द्वारा माह में दो बार की जा सकती है।
- ◆ मोटे दाने वाली मिट्टी में पौध लगाते समय गोबर की सड़ी खाद का प्रचुर मात्रा में उपयोग करना चाहिए तथा गहरे गड्ढे खोदना चाहिए।

ऑवला आधारित कृषिवानिकी विकास के विभिन्न चरणों में सीखे गये अनुभवों का उपयोग अन्य वृक्षों जैसे बेल, सफेदा, अमरूद आदि वृक्ष आधारित कृषिवानिकी को अपनाने में किया जा सकता है।

आर.के. तिवारी, आर.पी. द्विवेदी एवं सी.के. बाजपेयी
राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी-284 003

- ◆ Protection of plants against stray cattle, sheep, goat, camel, blue bulls etc. should be ensured by tree guard or effective water and ward.
- ◆ Cultivation of intercrops is mandatory during early establishment and growth as it helps the plant indirectly by way of tillage interculture, irrigation, fertilizer, etc. done to crop.
- ◆ Summer irrigation during first year of establishment is essential to plants for proper growth, It can be done through drip, pitcher or bucket.
- ◆ Raising aonla plantation on coarse textured soils should be done with 15-25 kg well rotten FYM and deep pitting.

The lessons learnt during the course of aonla promotion in Bundelkhand region will constitute guideline of promotion of tree plantations under agroforestry system.

R.K. Tewari, R.P. Dwivedi and C.K. Bajpai
National Research Centre For Agroforestry, Jhansi-284 003

SERVICES AVAILABLE AT THE CENTRE

NRCFAF offers consultancy to Farmers, Companies, Government Departments, Cooperatives and other interested organizations on

- ◆ Selection of tree species, tree crop combination
- ◆ Selection of trees for rehabilitation of degraded lands
- ◆ Establishment of nursery, propagation techniques of different tree species
- ◆ Preparation of development project reports, on line search and access of information on tree species suitable for agroforestry
- ◆ Insect-pest management in agroforestry
- ◆ Biotechnologies (Tissue culture)
- ◆ Soil fertility evaluation
- ◆ Agroforestry based land use plan

Centre also conducts training programmes for officers of various Government departments and other organizations on various aspect of agroforestry.

Centre also prepares and provides improved seedlings of Aonla, Jatropha, Karanj, Neem etc.

CONSULTANCY GIVEN BY DR. K. KAREEMULLA, SR. SCIENTIST (AGRI. ECONOMICS)

Dr. K. Kareemulla, Sr. Scientist (Agril. Econ.) acted as a consultant for mid-term monitoring of a network project on agroforestry during 3rd - 4th December 2005.

The project is being implemented under the Andhra Pradesh Netherlands Biotechnology Programme by the Biotechnology Unit of Institute of Public Enterprise, Osmania University Campus, Hyderabad. As part of the project, resource poor farmers of dryland regions of Mahaboobnagar and Nalgonda districts are practicing agri-horticulture cum boundary plantation. Some reputed NGOs of these regions are active partners in the project.

DOCTORATE DEGREE

Sh. R.S. Yadava, Scientist (Sr. Scale) awarded Ph.D. degree on the topic entitled "Organic Matter Dynamics and Nutrient Availability under Traditional Agroforestry Systems in Semi-arid Condition of Rajasthan" from RAU, Bikaner (Raj.).

ई-गवर्नेन्स पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

केन्द्र के प्रशासनिक एवं वित्तीय कर्मियों के लिये दिनांक 24 अक्टूबर 2005 को ई-गवर्नेन्स विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। डा. अजीत, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दैनिक शासकीय कार्य में कम्प्यूटर का उपयोग एवं इन्टरनेट की प्रारम्भिक जानकारी दी। श्री आर.एच. रिजवी, वैज्ञानिक ने सरकारी लिखापट्टी में ई-मेल की उपयोगिता के बारे में बताया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सर्वश्री आर.बी. शर्मा, सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी; डी.के. अवस्थी, अधीक्षक; सी. शिवदासन, निजी सचिव; ओमप्रकाश, स्टेनोग्राफर; दीपक विज; स्टेनोग्राफर; दलवीर सिंह, सहायक; के.पी. शर्मा, महेन्द्र कुमार, वरिष्ठ लिपिकों एवं वीरेन्द्र सिंह तोमर व वीरपाल सिंह, कनिष्ठ लिपिकों ने भाग लिया।

IN- HOUSE TRAINING ON E- GOVERNANCE

A training programme was organized on E- governance for the administrative and finance staff of the Centre on 24th October, 2005. Dr. Ajit covered the aspects like use of computer in office work and fundamentals of Internet. Sh. R. H. Rizvi, demonstrate the browsing, searching on Internet and use of e-mail for official correspondence. Sh. R B Sharma, A F & A O; Sh. D K Awasthi, Superintendent; Sh. C Sivadasan, P S to Director; Sh.Om Prakash, Jr. Stenographer; Sh. Deepak Vij, Jr. Stenographer; Sh. Dalbir Singh, Assistant; Sh. K P Sharma, Sr. Clerk; Sh. Mahendra Kumar, Sr. Clerk; Sh. Birendra Singh Tomar, Clerk and Sh. Vir Singh Pal, Clerk participated in the training.

कृषिवानिकी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

केन्द्र द्वारा तामिलनाडु के वन अधिकारियों के लिये कृषिवानिकी पर एक प्रशिक्षण दिनांक 22 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2005 तक दिया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में तामिलनाडु से आये 18 सी.सी.एफ., सी.एफ., डी.एफ.ओ., ए.सी.एफ. एवं आर.ओ. ने भाग लिया।

SHORT TRAINING ON AGROFORESTRY

Centre organized Short training on Agroforestry for TN Forest Department Officers w.e.f. 22nd September to 1st October, 2005. Eighteen Forest officers including CCF, CF, DFO, ACF and RO attended the programme.



पुरस्कृत

डा. आर.पी. द्विवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) को वर्ष 2005 के लिये भारतीय विस्तार शिक्षा समिति, नई दिल्ली द्वारा युवा वैज्ञानिक पुरस्कार दिया गया।

AWARDED

Dr. R.P. Dwivedi, Sr. Scientist (Agril. Extension) has received the Young Scientist Award for the year 2005 by Indian Society of Extension Education, IARI, New Delhi.



पदोन्नतियाँ

1. श्री राजेन्द्र सिंह, तकनीकी अधिकारी (टी-5) की दिनांक 1 जनवरी 2005 से तकनीकी अधिकारी (टी-6) के पद पर पदोन्नति हुयी।
2. श्रीमती उमा, तकनीकी अधिकारी (टी-5) की दिनांक 1 जनवरी 2005 से तकनीकी अधिकारी (टी-6) के पद पर पदोन्नति हुयी।
3. श्री शिशुपाल सिंह यादव, तकनीकी सहायक (टी-3) की दिनांक 21 मार्च 2005 से वरिष्ठ तकनीकी सहायक (टी-4) के पद पर पदोन्नति हुयी।

PROMOTIONS

1. Sh. Rajendra Singh, Technical Officer (T-5) promoted to the post of Technical Officer (T-6) w. e. f. 1st January, 2005.
2. Smt. Uma, Technical Officer (T-5) promoted to the post of Technical Officer (T-6) w. e. f. 1st January, 2005.
3. Sh. S. P. Singh Yadav, Technical Assistant (T-3) promoted to the post of Sr. Technical Assistant (T-4) w.e.f. 21st March, 2005.

मानव संसाधन विकास

- डा. ए.के. शंकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दिनांक 4 से 24 अक्टूबर, 2005 तक नार्म, हैदराबाद में इप्लीकेशन्स ऑफ डब्ल्यू.टी.ओ. एग्रीमेंट ऑन इंडियन एग्रीकल्चर विषय पर आयोजित शरदकालीन विद्यालय में भाग लिया।
- डा. के. करीमुल्ला, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दिनांक 19-20 अक्टूबर 2005 में नई दिल्ली में पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप ऑन हरनेसिंग द पोटेन्शियल ऑफ रेनफिड एग्रीकल्चर विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया एवं अपना शोध-पत्र प्रस्तुत किया।
- डा. आर.पी. द्विवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दिनांक 29 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2005 तक आई.वी.आर.आई., इज्जतनगर में इन्टरपेनियरशिप डवलपमेंट एण्ड स्ट्रेटेजी फार रूरल इंडिया विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
- डा. आर.पी. द्विवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 15 से 17 दिसम्बर 2005 तक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में ग्रीन टू एवरग्रीन: चैलेन्जेज टू एक्सटेंशन एजुकेशन विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
- डा. पी. राय, प्रधान वैज्ञानिक ने दिनांक 9 से 10 नवम्बर, 2005 तक लरनिंग फ्राम इन्स्टिट्यूशनल चैन्जेज विषय पर नई दिल्ली में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- डा. एस.के. ध्यानी, निदेशक, डा. अजीत एवं डा. ए.के. हाण्डा, वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने दिनांक 24 से 25 नवम्बर 2005 में सी.एस. डब्ल्यू.सी.आर. एण्ड टी आई के ऊटी स्थित रीजनल स्टेशन पर नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेंट फार इकोडवलपमेंट एण्ड लाइवली सिक्यूरिटी इन सर्दन इंडिया विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
- डा. एस.पी. अहलावत, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने ए.एस.सी.आई., हैदराबाद में आई.पी.आर. एण्ड डब्ल्यू.टी.ओ. रिलेटेड इश्यूज विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिनांक 5 से 9 दिसम्बर 2005 तक भाग लिया।

आगन्तुक

1. डा. सी.डी. माई, अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मंडल, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
2. डा. सी.आर. हाजरा, कुलपति, इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)।
3. प्रो. पी.एन. श्रीवास्तव, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, गणित एवं कम्प्यूटर विज्ञान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)।
4. डा. वी.एस. तोमर, अनुसंधान निदेशक, जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)।
5. डा. एस.ए. तिवारी, 5, सरस्वती नगर, ए.जी. ऑफिस के पीछे, ग्वालियर (म.प्र.)।

HUMAN RESOUECE DEVELOPMENT

- Dr. A.K. Shanker, Sr. Scientist attended 21 days Winter School on "Implications of WTO Agreement on Indian Agriculture" during 4th-24th October, 2005 organized by ICAR, New Delhi held at NAARM, Hyderabad.
- Dr. K. Kareemulla, Sr. Scientist participated and contributed a paper in the International Conference on "Public-Private Partnerships on Harnessing the Potential of Rainfed Agriculture" during 19th-20th October, 2005, organized by FICCI, ICRISAT & IFPRI at New Delhi.
- Dr. R.P. Dwivedi, Sr. Scientist participated in National Seminar on "Entrepreneurship Development for Livelihood Security- Experiences Prospects and Strategy for Rural India" during 29th November-1st December, 2005 held at IVRI, Izatnagar.
- Dr. R.P. Dwivedi, Sr. Scientist participated in National Seminar on "Green to Evergreen: Challenges to Extension Education" during 15th-17th December, 2005 held at IARI, New Delhi.
- Dr. P. Rai, Pr. Scientist participated in Workshop on "Learning from Institutional Changes" during 9th-10th November, 2005 held at New Delhi.
- Dr. S.K. Dhyani, (Director), Dr. Ajit, Sr. Scientist and Dr. A.K. Handa, Sr. Scientist participated in the National Conference on "Natural Resource Management for Eco-development & Livelihood Security in Southern India" during 24th-25th November, 2005 at Regional Station of CSWCR&TI, Ooty (T.N.).
- Dr. S.P. Ahlavat Sr. Scientist participated in Training Programme on "IPR and WTO Related Issues" during 5th- 9th December, 2005 sponsored by DST held at ASCI, Hyderabad.

VISITORS

1. Dr. C.D. Mayee, Chairman, ASRB, ICAR, New Delhi.
2. Dr. C.R. Hazra, Vice Chancellor, IGAU, Raipur (Chattisgarh).
3. Prof. P.N. Srivastava, Prof. & Head, Deptt. of Maths & Comp. Science, Bundelkhand University, Jhansi (U. P.).
4. Dr. V.S. Tomer, Director of Research, JNKVV, Jabalpur (M.P.).
5. Dr. S.A. Tiwari, 5, Saraswati Nagar, Behind AG Office, Gwalior (M.P.).

6. डा. ओ.पी. चतुर्वेदी, प्राध्यापक (उद्यानिकी), चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)।
 7. डा. पी.एस. देशमुख, विभागाध्यक्ष (पौध दैहिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली।
 8. डा. ओ.पी. पारीख, विशिष्ट वैज्ञानिक, केन्द्रीय शुष्क उद्यानिकी अनुसंधान संस्थान, करीमनगर, लालगढ़, बीकानेर (राजस्थान)।
 9. डा. पी.एल. सरोज, प्राध्यापक (उद्यानिकी), सरदार बल्लभ भाई पटेल विश्वविद्यालय एवं प्रौद्योगिकी, मोदीपुरम, मेरठ (उ.प्र.)।
 10. डा. आर.आर. शाह, डीन (उद्यानिकी एवं वानिकी), नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी (गुजरात)।
 11. श्री एच.एस. जोशी, निदेशक राजभाषा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
 12. श्री एस.पी. उनियल, सहायक निदेशक राजभाषा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
6. Dr. O.P. Chatruvedi, Prof. (Hort.), CSA Krishi Viswa Vidyalaya, Kanpur (U.P).
 7. Dr. P.S. Deshmukh, Head of Division (Pl. Physiology), IARI, Pusa, New Delhi.
 8. Dr. O.P. Pareek, Emeritus Scientist, CIAH, A-239, Karimnagar Lalgarh, Bikaner (Raj.).
 9. Dr. P.L. Saroj, Professor (Hort.), Saradar Ballabh Bhai Patel Univ. & Tech., Modipuram, Meerut (U.P.).
 10. Dr. R.R. Shah, Dean (Hort. & Forestry), Navsari Agril Univ., Navasari (Gujarat).
 11. Sh. H.C. Joshi, Director Raj Bhasha, ICAR, New Delhi.
 12. Sh. S.P. Uniyal, Assistant Director, Raj Bhasha, ICAR, New Delhi.

कृषिवानिकी केन्द्र की गतिविधियाँ समाचार पत्रों में....



प्रकाशक : निदेशक, राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी
 Published By : Director, National Research Centre for Agroforestry, Jhansi
 दूरभाष / Phones : +91 (0510) 2730213, 2730214 फैक्स / Fax : +91 (0510) 2730364

दिशा-निर्देश एवं मार्ग-दर्शन : डा. एस.के. ध्यानी, निदेशक
 Supervision & Guidance : Dr. S.K. Dhyani
 संकलन एवं सम्पादन : आर.के. तिवारी, राजीव तिवारी एवं ओ.पी. चतुर्वेदी
 Compiled & Edited By : R.K. Tewari, Rajeev Tiwari and O.P. Chaturvedi

मुद्रक : मिनी प्रिन्टर्स, झाँसी.
 Printed at : Mini Printers, Jhansi. दूरभाष / Phones : 2447831, 2446820, मोबाइल / Cell. : 94151 13108